Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language,
Online ISSN 2348-3083, SJ IMPACT FACTOR 2016 = 4.44, www.srjis.com
UGC Approved Sr. No.48612, DEC-JAN 2018, VOL- 5/25

Dr. Rajender kumar Dean Faculty of Education Tantia University Sri Ganganagar

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

ात्राध्यापकों द्वारा सामान्य नागरिक काननों एवं उनकी पा लना की समझ का एक अध्ययन'

5.1 भमिका :–

मानव व्यवहार से सम्बन्धित अनसंधान. चाहे वह शिक्षा के क्षेत्र में हो या किसी भी अन्य क्षेत्र में हो कहीं अधिक चनौतीपर्ण कार्य है क्योंकि मानव व्यवहार केवल अने कानेक तत्वों से प्रभावित होता है. साथ ही ये प्रभावी तत्व भी बदलते रहते हैं। ऐसी दशा में अनसंधान के माध्यम से किसी वस्तनिष्ठ. सर्वमान्य निष्कर्ष पर पहँचना क ाफी कठिन कार्य है इसलिए समस्या के चनाव में. तर्क संगत परिकल्पनाओं की स्थ ापना तथा व्याख्या में उपयक्त अभिकल्प तथा उपकरणों के चनाव में और उनके म ाध्यम से प्रदत्तों में से अधिक से अधिक विश्सनीय एवं वैध निष्कर्ष और उनकी व्या ख्या करने में अनसंधानकर्ता को काफी सर्तकता और सझ बझ से काम लेना होता है। इसके लिए कोई एक प्रमाणिक रास्ता नहीं है। बहत कछ अनसंधानकर्ता के ज्ञा

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

न. विवेक तथा अनभव पर निर्भर करता है कि वह अपने अनसंधान को कितना सव यवस्थित. तर्क संगत तथा वस्तनिष्ठ बना सकता है।

जीवन के सभी क्षेत्रों में मल्यांकन की प्रक्रिया सतत रूप से चलती रहती है। जीवन ही शिक्षा और शिक्षा ही जीवन है इसलिए शिक्षा में मल्यांकन की प्रक्रिया योजनाब द्ध तरीके से चलती रहती है।

5.2 समस्या कथन :–

''छात्राध्यापकों द्वारा सामान्य नागरिक काननों एवं उनकी पालना की समझ का ए क अध्ययन''

5.3 अध्ययन के उद्देश्य :–

1. एस.टी.सी. प्रशिक्षणार्थी छात्राओं में सामान्य काननी पालना एवं समझ का अध्य यन करना।

2. एस.टी.सी. प्रशिक्षणार्थी छात्रों में सामान्य काननी पालना एवं समझ का अध्ययन करना।

3. ग्रामीण एस.टी. सी. प्रशिक्षणार्थियों में सामान्य काननी पालना एवं समझ का अध ययन करना

4. शहरी एस.टी.सी. प्रशिक्षणार्थियों में सामान्य काननी पालना एवं समझ का अध्य यन करना।

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

5.

सरकारी एस.टी.सी. प्रशिक्षणार्थियों में सामान्य काननी पालना एवं समझ का अ ध्ययन करना।

6.

निजी (गैर सरकारी) एस.टी.सी. प्रशिक्षणार्थियों में सामान्य काननी पालना एवं समझ का अध्ययन करना।

5.4 अध्ययन की परिकल्पनाऐं :–

1.

एस.टी.सी. प्रशिक्षणार्थियों में सामान्य काननी पालना एवं समझ उच्च स्तर की पायी जाती है।

2. छात्रा एस.टी.सी. प्रशिक्षणार्थियों में सामान्य काननी पालना एवं समझ छात्रों की अपेक्षा उच्च स्तर की पायी जाती है।

3. गैर सरकारी (निजी) छात्रा प्रशिक्षणार्थियों में छात्रों की अपेक्षा सामान्य काननी पालना एवं समझ उच्च स्तर की पायी जाती है।

4.

सरकारी छात्रा प्रशिक्षणार्थियों में छात्राओं की अपेक्षा सामान्य काननी पालना एवं समझ निम्न स्तर की पायी जाती है।

5. शहरी छात्रा प्रशिक्षणार्थियों में सामान्य पालना एवं समझ छात्रों की अपेक्षा उच्च स्तर की पायी जाती है।

6. ग्रामीण छात्र प्रशिक्षणार्थियों में सामान्य काननी पालना एवं समझ छात्राओं की

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

अपेक्षा उच्चस्तर की पायी जाती है।

5.5 न्यायदर्श :–

शोधकत्रा ने यादच्छिक न्यायदर्श पद्धति से एस.टी.सी. के 400 प्रशिक्षणार्थियों का न्यादर्श हेत चयन किया है।

5.6 अध्ययन में प्रयक्त विधि :–

प्रस्तत विधि में सर्वेक्षण विधि को अपनाया गया है।

5.7 उपकरण एवं तकनीक :–

प्रस्तत अध्ययन में '' प्रशिक्षणार्थियों (छात्राध्यापकों) में सामान्य काननी पालना एवं समझ का अध्ययन. अध्ययन किया गया है। इस अध्ययन में सामान्य कानन परीक्षण का अनसरण किया गया है।

5.8 अध्ययन में प्रयक्त सांख्यिकी :–

1. मध्यमान
2. प्रामाणिक विचलन
3. t -परीक्षण

5.9 उद्देश्य आधारित प्रदत्तों का निष्कर्ष :–

साारणी संख्या 1

वर्ग	आवति	प्रतिशत	स्तर
80 –99	98	49	उच्च सकारात्मक

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

60 –79	42	41	सकारात्मक
40 –59	16	8	औसत
20 –39	4	2	नकारात्मक
0 –19	0	0	निम्न नकारात्मक
		100	

साारणी संख्या 1 के अनसार 200 प्रशिक्षणार्थियों में से 98 प्रशिक्षणार्थियों 80–99 वर्ग के अन्तर्गत आते है अतः 49 प्रतिशत प्रशिक्षणार्थियों में उच्च सकारात्मक स्तर की सामान्य काननी पालना एवं समझ पायी जाती है।

2

सारणी संख्या 1 के अनसार 200 प्रशिक्षणार्थियों में से 82 प्रशिक्षणार्थी 60–79 वर्ग के अन्तर्गत आते है। अतः 41 प्रतिशत प्रशिक्षणार्थियों में सकारात्मक स्तर की सामान्य कानन पालना एवं समझ पायी जाती है।

3.

सारणी संख्या 1 के अनसार 200 प्रशिक्षणार्थियों में से 16 प्रशिक्षणार्थी 40 –59 वर्ग के अन्तर्गत आते है अतः 8 प्रतिशत प्रशिक्षणार्थियों में औसत स्तर की सामान्य काननी पालना एवं समझ पायी जाती है।

4.

सारणी संख्या 1 के अनसार 200 प्रशिक्षणार्थियों में से 4 प्रशिक्षणार्थी 20–

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

39 वर्ग के अन्तर्गत आते है अतः 2 प्रतिशत प्रशिक्षणार्थियों में नकारात्मक स्त र की सामान्य काननी पालना एवं समझ पायी जाती है।

5.

सारणी संख्या 1 के अनसार 200 प्रशिक्षार्थियों में से शन्य (0) प्रशिक्षणार्थी 0–19 वर्ग के अन्तर्गत आते हैं अतः शन्य (0) प्रतिशत प्रशिक्षणार्थियों में निम्न नकारात्मक स्तर की सामान्य कननी पालना एवं समझ पायी जाती है।

वर्ग	आवति	प्रतिशत	स्तर
80 –99	42	21	उच्च सकारात्मक
60 –79	138	69	सकारात्मक
40 –59	12	6	औसत
20 –39	8	4	नकारात्मक
0 –19	0	0	निम्न नकारात्मक
		100	

1.

सारणी संख्या 2 के अनसार 200 प्रशिक्षणार्थियों में से 42 प्रशिक्षणार्थी 80–99 वर्ग के अन्तर्गत आते है अतः 21 प्रतिशत प्रशिक्षणार्थियों में उच्च सकारात्मक स्तर की सामान्य काननी पालना एवं समझ पायी जाती है।

2.

सारणी संख्या 2 के अनसार 200 प्रशिक्षणार्थियों में से 138 प्रशिक्षणार्थी 6

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

0–79 वर्ग के अन्तर्गत आते है। अतः 69 प्रतिशत प्रशिक्षणार्थियों में सकारात्मक स्तर की सामान्य कानन पालना एवं समझ पायी जाती है।

3.

सारणी संख्या 2 के अनसार 200 प्रशिक्षणार्थियों में से 12 प्रशिक्षणार्थी 40–59 वर्ग के अन्तर्गत आते है अतः 6 प्रतिशत प्रशिक्षणार्थियों में औसत स्तर की सामान्य काननी पालना एवं समझ पायी जाती है।

4.

सारणी संख्या 2 के अनसार 200 प्रशिक्षणार्थियों में से 8 प्रशिक्षणार्थी 20–39 वर्ग के अन्तर्गत आते है अतः 4 प्रतिशत प्रशिक्षणार्थियों में नकारात्मक स्तर की सामान्य काननी पालना एवं समझ पायी जाती है।

5.

सारणी संख्या 2 के अनसार 200 प्रशिक्षार्थियों में से शन्य (0) प्रशिक्षणार्थी 0–19 वर्ग के अन्तर्गत आते हैं अतः शन्य (0) प्रतिशत प्रशिक्षणार्थियों में निम्न नकारात्मक स्तर की सामान्य कननी पालना एवं समझ पायी जाती है।

5.10 अध्ययन की परिसीमाऐं :–

प्रस्तत शोध कार्य श्री गंगानगर व हनमानगढ जिले के शहर एवं ग्रामीण क्षेत्र के एस.टी. सी. प्रशिक्षणार्थियों तक सीमित है तथा एस.टी.सी. प्रशिक्षणार्थियों में रिथत एक (राजकीय) सरकारी एक गैर सरकारी (प्राइवेट) संस्थानों में प्रशिक्षणार्थियों में सामान्य काननी पालना एवं समझ के अध्ययन के परीक्षण तक सीमित है।

5.11 भावी शोध हेत सझाव :–

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

*

इस शोध को भिन्न–भिन्न जिलों के प्रशिक्षणार्थियों के तलनात्मक अध्ययन में प्र यक्त किया जा सकता है।

*

प्रस्तत शोध केवल 400 प्रशिक्षणार्थियों पर किया गया है जिसे ओर अधिक वि स्तत किया जा सकता है।

*

इस अध्ययन को सरकारी व गैर सरकारी संस्थानों के प्रशिक्षणार्थियों के तलना त्मक अध्ययन के रूप में लिया जा सकता है।

*

यह शोध एस.टी.सी प्रशिक्षणार्थियों पर ही किया गया है भावी शोध बी.एड. प्रशि क्षणार्थियों पर किया जा सकता है।

*

यह अध्ययन प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का द्योतक है भावी शोध शैक्षि क अभिवति पर किया जा सकता है।

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

संदर्भ ग्रन्थ सचि

1. United Nations Unversal Declaration of Human Rights (1948)
2. Fladers Ned : Indian Legal Research Publishing company (1970)
3. Eric Hoyle : University of Manchester The Role of The Teacher (1975)
4. Dr. Nayar Usha : Legal Literacy for Educational Personel with focus on women and Girls" National Council of Educational Research and Trainees Resource Material -997
5. Dalal ; Arvinder Singh : The Information Technology Act 2000' A Perspective" M.D.V. Law Journal. (2002)
6. **K. Sudha Rao of Arti Chatrapathi :-**

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

Human Rights in Education - College Administration View Point " New Frontiers n education (2004).

7. Bhawna Misra : Curriculam Refom and Educational Development Mohit Publications New Delhi (2004)
8. Jaganath Moenty : Human Right Eductracks - Vol.14 No.2 October (2004)
9. Kavitha Jain : Future of Teacher Eaueation Sumit Enterprises, New Delhi (2004).
10. Dr. A.P.J. Abdul Kalam : Dynamics of Society is the function of science, " Law and ethics." Lawyer update - Vol. XI (2005)
11. J.N. Bhatt : New, Socio - legal,Perception and challengers of Bio Genetics Technology
12. Dr. Vijay Narayan Mani Tripathi : Jurispru dence & Legal Theory Central Law Publication (2005). Allahabad.
13. वेस्ट जॉन डब्ल्य :

" रिसर्च इन एजकेशन " प्रिन्टिग हॉल एंगल वड क्लिप्स, 1959।

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

14. बच. एम.बी. :

थर्ड सर्वे ऑफ एजकेशनल रिसर्च. एन. सी.ई. आर. टी. अरविन्द मार्ग नई दिल्ली

15. खान. एम. जेड: :

'' सोशल वर्क इन इण्डिया'' रवि पब्लिशिंग हाऊस. नई दिल्ली . 1966

16. शर्मा . वीरन्द्र प्रकाश :

'' रिसर्च मेथडॉलोजी'' पंचशील प्रकाशन. जयपर 1999।

17. रॉय. पी. एन :

'' अनसंधान परिचय'' लक्ष्मी नारायण अग्रवाल प्रकाशन. आगरा. 1973।

18. बच. एम. बी. :

'' फार्थ सर्वे ऑफ एजकेशनल रिसर्च''. एन. सी.ई. आर. टी. अरविन्द मार्ग. न ई दिल्ली।

19. बच. एम. बी. :

'' फिफथ सर्वे ऑफ एजकेशनल रिसर्च''एन. सी.ई. आर. टी. अरविन्द मार्ग. न ई दिल्ली।

20. चार्टस वी. गडस :'' एशेन्शियल ऑफ एजकेशनल रिसर्च'' न्ययार्क (1987)

21.

बैक स्टार्म. सी. एच. एवं हर्श. जी.डी. :'' सर्वे रिसर्च नार्थ वेस्टर्न यनिवर्सिटी प्रेस ''. इन्वेन्शटोन (1963)

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

22. मै. ऐशन
: '' ऐलिमेन्टस ऑफ ऐजकेशनल रिसर्च''. मैकग्रहिल कम्पनी. न्ययार्क (196 3)

23. विलियम. जे. गड व पाल के हाटस : '' मैथडस इन सोशल रिसर्च मग्रोहिल कम्पनी'' न्ययार्क (1952)

24. यंग. पी.वी : '' मैथडस इन सोशल रिसर्च मग्रोहिल कम्पनी'' न्ययार्क (1956)

25. कोकरण. डब्ल्य जी.
: '' सैम्पलिंग टेक्नीक्य इण्डियन एडिशन बाम्बे एशियन पब्लिशिंग हाऊस'' (1 963)

26. गड एव हॉट
: '' मेथडस इन सोशल रिसर्च एप्लेटस सेन्च्यरी कम्पनी.'' न्ययार्क (1968)

27. पर्थेन मिलडेड : '' सर्वेज पल्स एण्ड सैम्पलस मेग्राहिल कम्पनी . '' न्ययार्क (1 968)

28. पारसनाथ आर . : '' अन
संधान परिचय. '' लक्ष्मीनारायण अग्रवाल. आगरा –3 (1973)

29. टेवर्स. जॉन डब्ल्य : '' एन इन्टोडक्शन रिसर्च'' में मैकमिलन न्ययार्क (1974)

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

30. बी. एस. रायजादा : '' शिक्षा में अन
संधान के आवश्यक तत्व'' राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी. जयपर (1997)

31. भटनागर. आर. पी.
: '' शिक्षा अनसंधान'' मीनाक्षी ईगल बक कम्पनी. मेरठ (1997)

32. भार्गव एम एवं भार्गव एच.पी : '' आधनिक मनोवैज्ञानिक परीक्षण एवं मापन शैक्षि
ाक प्रशासन. '' आगरा (1997)

33. शर्मा. आर. ए. : '' शिक्षा अनसंधान '' सर्या पब्लिकेशन. मेरठ (1998)

34. प्रीति वर्मा तथा डी. एन. श्रीवास्तव : '' मनोविज्ञान और शिक्षा में सांख्यिकी'' वि
नोद पस्तक मंदिर आगरा – (1997)

35. शर्मा वीरेन्द्र प्रकाशन : '' रिसर्च मैथडॉलोजी'' पंचशील प्रकाशन. जयपर (19
99)

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies